शेख़ फ़रीद – सबद १२४
हंसा देखि तरंदिआ बगा आइआ चाउ ॥
सलोक, गुरु अमरदास, गुरु ग्रंथ साहिब, १३८४

हंसा देखि तरंदिआ बगा आइआ चाउ ॥
डुबि मुए बग बपुड़े सिरु तलि उपरि पाउ ॥१२२॥

सार: तुलनात्मक नक़ल करने का जाल उस यात्री जैसा है जो लगातार अपना रास्ता इसलिए बदलता रहता है क्योंकि दूसरों की यात्रा उसे अधिक सहज प्रतीत होती है। दूसरों की यात्रा पर ध्यान देने में, वह यात्री अपना ही लक्ष्य भूल जाता है। असली समस्या अपनी यात्रा को छोड़ने में नहीं है बल्कि बिना सोचे-समझे दूसरों के रास्तों पर चलने में है जिससे अपने स्वयं के अनोखे अनुभवों की संभावना ही नष्ट हो जाती है।

हंसा देखि तरंदिआ बगा आइआ चाउ ॥
हंस को सहजता से तैरते देख बगुले के मन में भी तैरने की इच्छा जागृत हो गई। यह तुलनात्मक नक़ल के जोखिम को दर्शाता है जहाँ हम बाहरी सफलता को आंतरिक शक्ति समझ बैठते हैं।

डुबि मुए बग बपुड़े सिरु तलि उपरि पाउ ॥१२२॥
बेबस बगुला सिर डूबा और पैर ऊपर रखे डूब गया। यह दर्शाता है कि कैसे बिना सोचे-समझे किया गया अनुकरण आकांक्षा को पीड़ा में बदल सकता है। (१२२)

तत्त्व: गुरु अमरदास, शेख़ फ़रीद द्वारा उजागर की गई बात को पुष्ट करते हैं, कि दिखावा विफल हो जाता है क्योंकि यह उस चीज को कायम नहीं रख सकता जिसकी यह सतही तौर पर नकल करता है। भले ही शुरुआत में यह दूसरों को भ्रमित कर सकता है लेकिन इसमें वह गहराई नहीं होती जिसकी आवश्यकता भीतरी मन को होती है। समय के साथ, दिखावे और असलियत के बीच की खाई चौड़ी

होती जाती है जिससे इस दिखावे को बनाए रखना मुश्किल हो जाता है। जब जीवन वास्तविकता की मांग करता है तब कोई भी नक़ली चीज़ उस आवश्यकता को सचमुच पूरा नहीं कर सकती।

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com